Indian Streams Research Journal
Vol - I , ISSUE - X , November 2011 ISSN:-2230-7850

# अंधायुग और आरण्यक एक विवेचन

**डॉ . सौदागर साळुंखे**
मा . ह . महाडिक कॉलेज़ मोडनिंब .

प्रतिभासंपन्न भारती ने दो-दो महायुद्धों के परिणामों को व्यक्त करने के लिए सन् **1955** में अधायुग का निर्माण किया | इरावती कर्वे के युगांत और धर्मवीर भारती के अंधायुग से प्रभावित होकर ही सन् **1975** में आरण्यक का निर्माण किया |

**1955** में प्रकाशित धर्मवीर भारती का अंधायुग और सन् **1975**में प्रकाशित रत्नाकर मतकरी का आरण्यक इन दोनों नाटकों के बीच बीस वर्ष का अंतर है | अंधायुग की कथावस्तु के संयोजन में नाटककार ने जहॉ एक ओर महाभारत का आश्रय लिया है,वहीं दुसरी ओर विष्णू पुराण से भी सहायता ली है | महाभारत और विष्णू पुराण से सहायता लेकर भी कुछ स्वकल्पित पात्र और स्वकल्पित घटनाओं के आधार पर अंधायुग की रचना की गई है |

आरण्यक की रचना अंधायुग और इरावती कर्वे के युगांत से प्रभावित होकर की है | अंधायुग और आरण्यक नाटक का विषय महाभारत के युद्धोपरांत का है | अतः इन नाटकों की कथावस्तु के घटनाएँ एवं प्रसंगों में साम्य होते हुए भी,उन्हीं घटनाएँ एवं प्रसंगों में प्रसंगानुकूल सुक्ष्म भेद भी है | पॉच अंकों में विभाजित अंधायुग की कथावस्तु में अंक विभाजन के लिए कथागायन का उपयोग किया गया है | प्रस्तुत नाटक में कुल तेरह बार कथागायन हुआ है | अंधायुग में महत्त्वपूर्ण घटना एवं प्रसंगो का वर्णन सफल एवं मार्मिक हुआ है | दो खंडों में विभाजित आरण्यक की संपुर्ण कथावस्तु में एक भी गीत नही है | फिर भी कथावस्तु के अंतर्गत घटना एवं प्रसंगों का उल्लेखनीय वर्णन हुआ है | अतः दोनों नाटककारों ने विवेच्य नाटकों की कथावस्तु को अपने -अपने ढंग से संजोया और संभाला है | अंधायुग में कुछ घटना एवं प्रसंग ऐसे हैं, जिनका उल्लेख तक आरण्यक में नही है | उसी तरह आरण्यक में भी कुछ घटना एवं प्रसंग ऐसे हैं जिनका उल्लेख तक अंधायुग में नही है | विवेच्य दोनों नाटक गीतिनाट्य हैं और गीतिनाट्य की कथावस्तु की विशेषताएँ दोनों नाटकों में पाई जाती है | दोनों नाटकों के शिल्प में ग्रीक त्रासदी का निर्वाह हुआ है |

दोनों नाटकों में कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ एवं प्रसंगों में साम्य होते हुए भी सुक्ष्म अंतर दिखाई देता है,जैसे -

1. धर्मनिष्ठ पांडव और अधर्मी कौरवों के बीच टूटती मर्यादाओं को देख महायुद्ध शुरू होने से पूर्व श्रीकृष्ण ने व्यक्त की गई महायुद्ध पूर्व की आशंका |
2. महायुद्धोपरांत का परिणाम महायुद्ध की विभीषिका |
3. बिना युद्ध के ही थके हुए सिपेसालारों के व्यर्थ जीवन की शोकांतिका, प्रहरी और प्रतिहारी की निरर्थकता |
4. भयंकर तुफान को साथ में लेकर आए,बादालों के समान दिखाई देनेवाले प्रतीक रूपी बादल |
5. युद्ध समय मोहजाल में फॅसकर अर्धसत्य करनेवालें युधिष्ठिर का अर्थसत्य |
6. भीमसेन के नित्य उपहास से तंग आकर कौरवों के माता-पिता ने किया हुआ वनागमन, भीमसेन के उपहास से वनागमन |
7. धर्म,अधर्म के बीच फॅसे कौरववंशी किंतु पांडव अनुयायी युयुत्स की आत्महत्या |
8. अंग पर निरर्थक पडे,बोझ सा लगनेवाले अपने शस्त्र पर किया आरोप प्रहरी और प्रतिहारी का अपने शस्त्र पर आरोप |
9. आत्मघाती अतृप्त आत्मा की भटकती प्रेतात्मा |
10. स्वामीनिष्ठा का बुरखा ओढ स्वेच्छा से ऑखों पर पट्टी चढाकर अंधत्व को अपनानेवाली गंधारी का पट्टी हटाना |

**11** . स्वार्थांध और ममतांध वश होकर भगवान श्रीकृष्ण को दिया हुआ गांधारी का शाप |
**12** . स्वेच्छा से मरण को वरण करनेवाले भगवान का वध श्रीकृष्ण वध |
**13** . सभी ओर से हारकर जीवन का अंतिम सत्य ढूँढने निकले आरण्यवासियों का अरण्य में अग्निसमर्पण |
**14** . मानव मूल्य की प्रतिष्ठा के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने दिया हुआ संदेश कृष्ण संदेश |

आदि प्रसंगों के आधार पर दोनों नाटककारों ने महायुद्धोपरांत उत्पन्न कुंठा,निराशा,विकृति ,अनास्था,अंधत्व आदि बातों के साथ-साथ मनुष्य के जीवन में कर्म और नियति के संबंध से परिचीत किया है | भारती और मतकरी इन दोनों नाटककारों ने अपनी-अपनी कृति अंधायुग और आरण्यक की कथावस्तु में आधुनिकता के बोध को गहरी संवेदना के स्तर पर अनुभूति का विषय बनाया है |

अंधायुग और आरण्यक का उद्देश प्रत्येक महायुद्ध के उपरांत पैदा हो जोने वाली विकृतियां, अंसगतियों, विघटित आस्थाओं और मूल्यहंता परिस्थितीयों को विचलीत कर देनेवाली जीवंत अभिव्यक्ति करना ही है | मूलतः विवेच्या दोनों नाटक युद्ध विरोधी नाटक है | दोनों नाटक वैयक्तिक संवेदना को चरम सत्य मान लेने की व्यापक त्रासदी का चित्रण करते हैं | इनमें मनुष्य को भेड या कठपुतली बना देनेवाली उस प्रत्येक चिंतन,सिद्धांत,आस्था,धर्म अथवा तथाकथित युग-पुरूष के ढोंग और खोखल का पर्दाफाश करके व्यक्ति की मनुष्यता,जिम्मेदारी,अस्मिता,रचनात्मकता और प्रेमभावना की प्रतिष्ठा का सार्थक प्रयत्न दोनों नाटककारों ने किया |

यह एक महत्वपूर्ण सत्य है कि,विवेच्य दोनों नाटक अतितोन्मुखी होने के बावजुद भी अंधायुग और आरण्यक पूर्णतः एक समकालीन और आधुनिक नाट्यरचनाएँ है | दोनों नाटकों की पौराणिक कथावस्तु से ऐसा लगता है कि पुराण के आयने में यह आज और आनेवाले कल का अक्स दिखाती हो | अतः महाभारत के युद्धोत्तर जीवन का दर्शन कराने में दोनों नाटककार सफल हुए है |

विवेच्य नाटकों के अंतर्गत आनेवाले सभी पात्रों में से केवल धृतराष्ट्र, गांधारी, युधिष्ठिर, युयुत्स, विदुर,सिपेसालार एवं व्याध इतने ही पात्र समान रूप से पाए जाते हैं | बाकी सभी पात्र असमान ही हैं,क्योकि अंधायुग के कुछ पात्र आरण्यक में नही हैं आरण्यक के कुछ पात्र अंधायुग में नही हैं | दोनों नाटककारो ने अपने अपने पात्रों के चरित्र चित्रण के लिए अपनाए हुई गीतिनाट्य चरित्र मनोविश्लेषण पद्धति का सफल निर्वाह किया हुआ है | विवेच्य नाटकों में चित्रित सभी पात्र अपने आप में प्रतीकत्व लिए हुए हैं | पात्रों के साथ-साथ दोनों नाटकों के अंकों के नाम भी प्रतीकात्मक ही है | जहाँ तक समान पात्रों के स्वभाव विशेषताओं में कुछ सुक्ष्म अंतर दिखाई देता है |

धृतराष्ट्र,स्वार्थांध ,ममतांध एवं पक्षपाती राज होने से एक विवेकहीन शासन कर्ता था | अंधायुग का धृतराष्ट्र जीवन के अंतिम क्षणों में भी अरण्य में लगी आग से बचना चाहता है | किंतु चाहने पर भी अपने को बचाने में असमर्थ रहे संजय को रोकते हुए उस आग को ही जीवन का अंतिम सत्य समझकर मजबुर होकर वहीं बैठ जाता है | तो अरण्यक का धृतराष्ट्र सभी ओर से हारकर अपमानित हुआ है,फिर भी जीवन के प्रति आसक्त है | तो फिर वह मरण से पहले मृत्यु को कैसे अपनाएगा किंतु अपने उद्देश्यहीन जीवित रहने की सत्यता प्रतीत होने पर स्वयं जंगल की प्रार्थना करते हुए लगी आग में आत्मसमर्पण कर देता है |

गांधारी ममतांध,मातृहृदया साथ ही आदर्श पतिव्रता भी है | किंतु पक्षपाती वृत्ति के कारण वह राजमाता के रूप में जीवनभर असफल ही रही | जीवन के अंतिम क्षणों में अंधायुग की गंधारी कृष्ण को दिए हुए अपने शाप की प्रथम समिधा बन उस शाप का वहन करते हुए दावानल में भस्म हो जाती है | तो आरण्यक की गांधारी पति का साथ देते हुए उनके समवेत अग्निसमर्पन करके पतिव्रता का आदय और आखरी कर्तव्य निभाती है |

अर्धसत्य कथन की वजह से कलंकीत हुए अपने दामन को लेकर राज्य करनेवाले राजा धर्मराज युधिष्ठिर के लिए अपना कर्तव्य निभाना भी एक बोझ सा लगता था | अतः ऐसे अंधायुग के राज युधिष्ठिर लगातर दुःखद घटनाओं का समाचार सूनने के बाद वो अपने में प्रभू श्री कृष्ण की मृत्यु देखने की हिम्मत जुटा न सके और कर्तव्य से मुँह फेरकर हिमालय की गोद में जाने की सोचते है |

तो आरण्यक का युधिष्ठिर वन यात्रियों को मिलने पर पहले उन्होनें अपनी दयनीय अवस्था में ही सही दिया हुआ आशीर्वाद लेते हैं और बाद में पिता समान किंतु शब्दहीन बने विदुर ने दिया हुआ दान स्विकार कर कर्तव्य की उंगली पकडकर चलने के लिए एवं उसे निभाने वापस आ जाते है |

गर्वोन्नत होने पर भी सबका अपराधी बने युयुत्सु के आत्महत्या करने के बाद भी वह प्रेतात्मा बन भटकता रहता है | अंधायुग में युयुत्सु की प्रेतात्मा श्रीकृष्ण की मृत्यु देखने के बाद अंधेयुग में प्रभु के बिना मानव भविष्य के बारे में प्रश्न उपस्थित कर सबको इस प्रश्न के प्रति आशंकित कर देती है | तो आरण्यक में युधिष्ठिर के अर्धसत्य कथन की वजह से भ्रमित बना युयुत्स अपनी मनचाही बातों बातों को आशंका का रूप देता है | आत्महत्या के बाद प्रेतात्मा बने युयुत्सु की नजर में विदूर को ही जीवन परमार्थ भरी बातें सिर्फ सुनने लायक है | इसलिए तो वह विदुर की परमार्थ भरी बाते विदुर को ही सुनाकर चला जाता है |

विदुर स्थितप्रज्ञ,संयमी,तटस्थ,तत्वेत्ता हितचिंतक और कृष्णभक्त हैं | अंधायुग में कृष्णभक्त विदुर का स्वर अपने कृष्ण के प्रति ही आशंकित हो जाता है | जीवन भर तत्त्वज्ञान का पाठ पढाने के कारण ही हिमालय की गोद में जाने में जाने की सोच रहे युधिष्ठिर को रोकने में वो सफल हो जाते है | तो आरण्यक का विदुर अपने ही परमार्थ भरी बातों में फॅसा हुआ है | जो कृष्ण मृत्यु जैसे भयंकर सदमें को सह नही पाता और शब्दहीन एवं पददीन बन जाता है | अंत में युधिष्ठिर को अपने संपूर्ण शरीर में स्थित इंद्रिय,गात्रे बल और प्राण का दान कर प्राण छोड देता है |

सिपेसालार तो सामान्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र है | अंधायुग के सिपेसालार दोनों प्रहरियों के दिल में जरा सी भी स्वामीनिष्ठा होती तो अरण्य में लगी आग का वर्णन करते हुए युँ ही नही चले जाते | तो आरण्यक का सिपेसालार एक ही है किंतु वफादार है | सेवक का धर्म निभाते हुए अपने आसक्ति भरे जीवन के एकेक पाश तोडते हुए आत्मसमर्पन के लिए बढता है | किंतु नियति के रोकने पर वह पश्चाताप ग्रस्त बन जाता है |

कृष्ण का हत्यारा जरा नामक व्याध शिकारी है | किंतु अंधायुग का व्याध वृद्धयाचक की प्रेतात्मा से बना है | जिसने कृष्ण के अंतिम संदेश को सुनने एवं सुनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है | तो आरण्यक का व्याध महाभारत का ही है | तो आरण्यक का व्याध महाभारत का ही है | जो ना तो कृष्ण का खेल समझ सका और ना ही कुंती ने समझाई हुई सेवाधर्म की बातें | वह अपने गुनाह को याद करते हुए पश्चाताप भरे मन से अपराधी सा महसूस कर चला जाता है |

बाकी बचे सभी असमान पात्रों से अंधायुग के अश्वत्यामा, श्रीकृष्ण,बलराम,संजय,कृतवर्मा,व्यास,वृद्धयाचक,गूँगा भिखारी और आरण्यक के कुंती,भीम और वृंद इन पात्रों की खुलकर चर्चा पहले की गई है | फिर भी अंधायुग में नायक के रूप में उपस्थित हुए जर्जर किंतु प्रतिशोध भरे अश्वत्यामा के अनास्था से आस्था में हुए परिवर्तन तक का चित्रण एवं मंच पर उपस्थित हुए बिना ही शुरू से लेकर अंत तक सब पर हावी होनेवाले उदात्त एवं प्रतिभासंपन्न श्रीकृष्ण के चरित्र मार्मिक एवं सफल हुआ है | वैसे ही मंच पर उपस्थित हुए बिना ही कृष्ण को लांछने वाले बलराम का, भयंकर आत्याचारी कृपाचार्य का,आकाशवाणी द्वारा ब्रह्मास्त्र प्रयोग के परिणामों से ज्ञात करानेवाले व्यास का,अपने भविष्य के मिथ्या सिद्ध होने पर उसके कारणों को बताने में सफल होनेवाले भविष्यवर्ता याचक एवं अश्वत्थामा द्वारा वधित होकर प्रेतात्मा बने वृद्धयाचक का और प्रतिशोध स्वरूप युयुत्सु पर पत्थर फेंकनेवाले गूँगा सैनिक इन सब के चरित्रों का सफल,मार्मिक एवं प्रसंगानुकूल चित्रण हुआ है | उसी तरह आरण्यक में राजमाता के रूप में धर्म नियति से अच्छी तरह परिचित रही कुंती का,मंचपर उपस्थित हुए बिना ही उपहासभरी बातों की बारिश करनेवाले भीमसेन का और प्रतिहारी को साथ तथा नाटक में रोचकता लानेवाले वृंद का इन सभी चरित्रों का भी प्रसंगानुकूल सफल एवं मार्मिक चित्रण हुआ है |

अतः विवेच्य नाटकों में चित्रित जो मंच पर उपस्थित हुए हैं और जो मंच पर उपस्थित हुए बिना ही जिनका गहरा प्रभाव नाटक में रहा है एवं लेखक द्वारा निर्माण किए पूर्ण कल्पित पात्रों का लेखन कौशल के आधार पर प्रसंगानुकूल,मार्मिक एवं चित्रण कराने में दोनो नाटककार पूर्ण रूप से सफल हुए हैं | विवेच्य दोनों नाटकों के अधिकांश संवाद मुक्त छंद में हैं | इनमें परिस्थिती और विषय के अनुसार बदलती हुई लय है | साथ ही दोनों नाटकों में जहॉ साधारण लंबाई के संवाद पाए जाते हैं वहॉ उनमें दीर्घतम् लंबाई के संवाद भी पाए जाते है | दोनों नाटकों में कल्पित पात्रों ( अंधायुग के दो प्रहरी और आरण्यक के प्रतिहारी वृंद के संवादों की लय प्रायः एक जैसी ही है और अन्य पात्रों के संवादों की लय प्रसंगानुकूल बदलती जाती है |

विवेच्य नाटकों के संवादों में गीतिनाट्य भाषाशैली की पांचो प्रकारों को कौशलता से उपयोग में लाने के कारण और भाषा की अन्यान्य विशेषताओं का सफलता से प्रयोग करने के कारण इन संवादों की भाषा अपनें में सक्षमता,सशक्तता एवं प्रतीकात्मकता लिए हुए है |

संवादों के माध्यम से काव्य बिंबों का प्रयोग कई स्थानों पर हुआ है |जिससे दोनों नाटकों में ऐसे कई दृश्य पाठकों के या दर्शकों के सामने चित्रात्मक रूप में समक्ष खडे हुए हैं ऐसा प्रतीत होता है | संवादों में बिब योजना का प्रयोग सफलता से हुआ

है | ऐसे लयबद्ध,संवादों में पाए जानेवाले महत्त्वपूर्ण गुण विशेषताओं ने विवेच्य नाटकों में बची-कुची कमियों की पूर्तता इस प्रकार की है |

संक्षिप्त संवादों ने और दीर्घतम लंबाई के संवादों की वजह से नाटकों के महत्त्वपूर्ण स्थल विशेष और पात्रों के चरित्र स्पष्ट रूप में उभारने में सहायता हुई है | अवसरानुकूल संवाद पाठकों को या दर्शकों को उबने नहीं देते | पात्रानुकूल संवादों ने एक-दूसरे के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए नाटक को प्रभावपूर्ण और प्रवाहमय बनाया है | गतिशील संवादों ने नाटकीय कथा को शीघ्रता से आगे बढाने का काम किया है | मार्मिक संवादों ने लेखकों के उद्देश्य कथन को पात्रों के माध्यम से दर्शक या पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होकर,उन्हें विचार करने के लिए मजबुर किया है | आवेशात्मक संवादों ने नाटकीय कथानक में रोचकता बढाने का काम किया है | व्यंग्योक्तियो से भरे संवादों ने पात्रों की कमीयॉ और जीवन का सत्य उद्घाटित करने का काम किया है | इनके अलावा और भी कई गुण विशेषताएँ इनमें पाई जाती है | संवादों के इन गुण विशेषताओं ने नाटक में वातावरण बनाए रखने में,सजीवता लाने में और पात्रों को अभिनय करने में सहायक होकर इन नाटकों को मंच पर या रेडिओ पर सफल रूप से प्रसारित कर प्रसिद्धि दिलाने में वे प्रमुख हक्कदार बने है | अतः इन सभी संवाद उपयोगी अनिवार्य अंगों को अंधायुग में अन्यान्य स्थल विशेष पर प्रयोग में लाया गया है और आरण्यक में अन्यान्य स्थल विशेष पर प्रयोग में लाया गया है | यह जरूरी भी नहीं की इनके स्थल विशेष में समानता नहीं हो |

आलोच्य दोनों कृतियॉ रंगमंच को दृष्टिपथ में रखकर ही लिखी गई है | इनकी विषयवस्तु महाभारत के युद्धोत्तर पृष्ठभूमि से जुडी हुई है | इसलिए इन नाटकों के शीर्षक विषयवस्तुनुरूप एवं उद्देशानुसार रखे गए हैं | दोनों नाटकों के अंतर्गत आनेवाले सभी समान-असमान कल्पित चरित्रों का चित्रण करने के लिए गीतिनाट्य की चारों पद्धतियों को अपनाते हुए मंच पर इन प्रभावी चरित्रों के माध्यम से अपने उद्देश्य तक पहुँचने में दोनों नाटककार सफल हुए हैं | नाटक की भाषा में भाषा की अन्यान्य विशेषता और गीतिनाट्य भाषाशैली की पॉचों प्रकारों का उपयोग होने के करण यह प्रभावात्मक भाषा पात्रों को अभिनय करने में या सामान्य-से-सामन्य दर्शक भी इसे आसानी से समझ सकता है | संवाद मुक्तछंद में हैं और लयबद्ध भी है | नाटकों की मौलिकता बढाने के लिए दोनों नाटककारों ने मंच पर अभिनित और रेडिओ पर श्रृतिप्रधान बनाने के लिए प्रयाप्त रंगनिर्देश दित है | मंच पर वातावरण निर्मिति के लिए विशेषकर ध्वनी योजना का प्रयोग किया गया है | मंच पर कठिन दृश्यों को स्पष्ट करने, मंच के भाव प्रदर्शित करने और पात्रों के भाव- भावनाओं को उजागर करने के लिए आवश्यकतानुसार प्रकाश योजना उपयोग में लाई है | मंच पर पात्रों को अभिनय करने के लिए कठीन दृश्यों के बारे में निर्देश देकर समझाया है | किंतु इन कठीन दृश्योंवाले अभिनय को कुशल निर्देशक के निर्देशन में और पदों का उपयोग करके आसान बनाया जा सकता है | विषयवस्तु की पृष्ठ भूमि का ध्यान रखते हुए मंचपर वातावरण निर्मिती की गई है और वंस-भूषा अपनाई हैं | विषयवस्तु में महत्त्वपूर्ण बदल करने से काल विपर्यास दिखाई देता है | नाटकों में नाटकीयता का गुण प्रचुर मात्रा में है | अंधायुग में सिर्फ कथागायान में संगीत है तो आरण्यक में बिल्कुल ही संगीत नहीं है | मंच पर अंधायुग का प्रारंभ पुरानी परंपरा में यतकिंचित परिवर्तन करके हुआ है तो आरण्यक का प्रारंभ पुरानी परंपरानुकूल ही हुआ है,किंतु दोनों का अंत ग्रीक त्रासदी का है | मंच पर इसे देखने के बाद बहुत देर तक इसका प्रभाव दर्शकों के मन पर रहता है | इस प्रकार अंधायुग और आरण्यक के वस्तुसंगठन,चरित्रांकन,भाषा,संवाद,कार्यव्यापार,रंगनिर्देश, प्रकाशयोजन, ध्वनियोजना, अभिनय, दृश्यांकन, देशकाल-वातावरण, वेश- भूषा, संकलनत्रय,नाटकीयता,संगीत,प्रारंभ और अंत आदि सभी दृष्टियों के सोच विचारोपरांत दोनों कृतियॉ न केवल श्रेष्ठ है बल्कि गीतिनादय के क्षेत्र में सर्वोच्च कृतियॉ हैं |